



Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W2KG210282	ImageGroup:	I3CN22242
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	གསུང་འབུམ། ངག་དབང་བསྟན་འཛིན་ནོར་བུ། gsung 'bum/ ngag dbang bstan 'dzin nor bu/
Author:	ངག་དབང་བསྟན་འཛིན་ནོར་བུ། ngag dbang bstan 'dzin nor bu
Descriptor:	n/a
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	[s.l.]
Publisher:	[s.n.]
Date:	[n.d.]
Volume:	1
Total Volumes:	2
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Tibetan Buddhist Resource Center, 1430 Massachusetts Ave, 5th Floor, Cambridge, Mass. 02138. Comments: 2020

[illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१३ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

(8)। सावित्रीसुत्र पद १०५१



गणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः





南無妙法蓮華經
觀世音菩薩普門品
第二十五
南無妙法蓮華經

南無妙法蓮華經
觀世音菩薩普門品
第二十五
南無妙法蓮華經



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



श्रीकृष्ण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



1872

[illegible]

20

[illegible]

2007

[The following text is extremely faint and largely illegible due to low contrast and blurring.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

১৭৮৩

[illegible]

[illegible]

१५३५

[illegible]

[illegible]

1990

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

21

॥ अथ चतुर्थः ॥ अथ चतुर्थः ॥ अथ चतुर्थः ॥ अथ चतुर्थः ॥ अथ चतुर्थः ॥

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

卷之五

1890

1890-1891

1. The first step in the process of identifying a problem is to recognize that a problem exists. This is often done by comparing current performance with a desired state or goal. If there is a significant difference, a problem is identified.

[illegible]

[illegible]

1943-1951

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे । अथ श्रीकृष्ण उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सजीव ।

[illegible]

[illegible]

महाराज

[illegible]

[illegible]

1477

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



卷之六

[illegible]

[illegible]

1944



21

१२५५

[illegible]

10/23/2019

[illegible]

57

[illegible]

726 200

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

सर्वप्रथम

[illegible][illegible]

五

[illegible]

Handwritten marginal note on the left side of the page.

31

16

32

33

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger entry, spanning multiple lines within a rectangular frame.

एकदशमः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

132

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अष्टाध्यायः ॥

25

[illegible]

[illegible]

पुनर्विचार

མཉམ་ཞུགས་པ།

[illegible]

[illegible]

12/25/2017

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनात्मजः ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १ ॥

[illegible]

227

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1927年

[illegible]

॥३॥



五

[illegible]

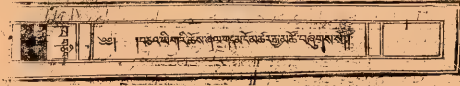
1200

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



291

[illegible]

25

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

7/23

[illegible]

[illegible]



۴۹۱

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

2

[illegible]

[illegible]

29

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

張

[illegible]



19

[illegible]

[illegible]

191

54

अथवा

534

2015

1953

2

100

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Conclusion**
 6. **References**

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गणेशाय नमः

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

༢༡
འཇོག་པ་འཇིགས་པ་ལྟོགས་པ་

༥
|| འཇིགས་པ་ལྟོགས་པ་ ||

༦
འཇིགས་པ་ལྟོགས་པ་

༧
འཇིགས་པ་ལྟོགས་པ་

༨
འཇིགས་པ་ལྟོགས་པ་



॥ ३३ ॥ दिव्यपदं देवकंदकेव पदं विष्णुसामयकं यमसामयकं
॥ ॥ साधुसुखदं पदं विष्णुसामयकं यमसामयकं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ।
 प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ।
 पाण्डवस्य दैव्यं बलं द्रुपदपुत्रो विदधते । अर्जुनस्य च दैव्यं बलं भीमार्जुनस्य च ॥ २ ॥
 धर्मस्य सङ्गोपाङ्गं धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे । समवेता संजय ॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ।
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ ४ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ ५ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ ६ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ ७ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ ८ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ ९ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच । अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे । प्रसादयामासुः । मामकाः पाण्डवाश्चैव । ततस्तान्ब्रूयते ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]





ॐ

२॥ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

१०२५



ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति
ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति
ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति
ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति



ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति
ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति
ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति
ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति



ॐ ह्रीं स्वास्तिस्वस्ति स्वास्ति



हो वंशक रावेंदाइव।

सा देसा कयाठ खडक।

॥ ५ ॥ ग रे सु के ई दे॥

॥ ६ ॥ केंसु पुनरपवसससुवसुसरे॥



संविच्छेद वंशज वं॥

सुविच्छेद वंशज वं॥

सुविच्छेद वंशज वं॥



॥ ७ ॥ सुविच्छेद वंशज वं॥

॥ ८ ॥ सुविच्छेद वंशज वं॥

[illegible]



ॐ । दमयन्तमविदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण । विदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण ।
 दमयन्तमविदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण । विदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण ।
 दमयन्तमविदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण । विदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण ।
 दमयन्तमविदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण । विदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण ।
 दमयन्तमविदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण । विदमो यत्कर्मसु रथेण यत्कर्मसु रथेण ।



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

9

1997-2007

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीमद्भगवत्परांशुसंस्कृतसूत्रम् ॥ १ ॥ अथ श्रीमद्भगवत्परांशुसंस्कृतसूत्रम् ॥ १ ॥ अथ श्रीमद्भगवत्परांशुसंस्कृतसूत्रम् ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ पञ्चमस्कन्धः । अथ पञ्चमस्कन्धो नाम पञ्चाशत्तमः स्कन्धः । अथ पञ्चमस्कन्धो नाम पञ्चाशत्तमः स्कन्धः ।

[illegible]

伊達氏

[illegible]

[illegible]

३५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

新刊

[illegible]

[illegible]

[illegible]

67157

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव
 किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे
 कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥

[illegible]

Figure 1

和歌

2

[illegible]

(Faint handwritten text at the bottom of the page)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

44

[illegible]

[illegible]

५८ क० ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

天/地/人

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य वचनम् ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



[illegible]

[illegible]

譯

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ ३ ॥

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः
काँक्षन्तः मामकाः पाण्डवाश्चैव त्वां प्रणम्य हृदि ।
निधायैवमेव सज्जमानस्तु मया द्रुपदमुखात् ॥
अहम्भक्त्या यथाज्ञानं विप्रोक्तं त्वया मेमांसे ॥
तस्मात्तु मे वदस्व शिष्यः शिष्टं परमेश्वर ॥
अर्जुन उवाच ॥ महारथीयं महाबाहो बभूवुः ।
तव चरणौ जगद्गुरुः पश्येत्पादयोः ॥
अथ त्वं वदस्व मे सुविप्रः सर्वभूतहिते रतः ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता
युयुत्सवः काँक्षन्तः मामकाः पाण्डवाश्चैव त्वां प्रणम्य
हि निधायैवमेव सज्जमानस्तु मया द्रुपदमुखात् ॥
अहम्भक्त्या यथाज्ञानं विप्रोक्तं त्वया मेमांसे ॥
तस्मात्तु मे वदस्व शिष्यः शिष्टं परमेश्वर ॥

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

150

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1827

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीभक्तिसुखाश्रयस्य नामाष्टोत्तशतकम्
 ॐ भक्त्या यथा शिवं पूजयेत् तदा मुक्तिरपि प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा कृष्णं पूजयेत् तदा मोक्षोऽपि प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा रामं पूजयेत् तदा परमं सुखं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा नारायणं पूजयेत् तदा सर्वं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा ब्रह्मं पूजयेत् तदा ज्ञानं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा विष्णुं पूजयेत् तदा धनं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा शिवं पूजयेत् तदा पुत्रं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा कृष्णं पूजयेत् तदा वधूतिं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा रामं पूजयेत् तदा राज्यं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा नारायणं पूजयेत् तदा स्वर्गं प्राप्नुयात् ॥
 भक्त्या यथा ब्रह्मं पूजयेत् तदा मोक्षं प्राप्नुयात् ॥

199

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

BOOK

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

100

[illegible]

[illegible]

३७। अथ पञ्चदशोऽध्यायः । अथ पञ्चदशोऽध्यायः । अथ पञ्चदशोऽध्यायः । अथ पञ्चदशोऽध्यायः । अथ पञ्चदशोऽध्यायः ।

[illegible]

ॐ कैंदणनेदकैंदलेणसणठियेहायेयमपुदुमुयदं। इणठेरसयवेरेकैंसदं। हेरदमेणपरिदुमवपुदुलेमसणेपवणसमसवणसदसय
दुमसलेमसयपठदविदुमससुठियेवपुस। इणठियेदुवेकैंपुपुयपविवण्णोयपुपदवमदवायवायवपववेदपुसठदपुददेदुदवदुदवसुस। इणठयद
वेवालेसवसवेदमवापविवण्णोमहोवममणसयसइवागुददुमपुदकम। देरपसवहोमदहोयेदुवेकैंपुपुदुवेदपमववेपवेकैंसठवपेणववेदवापवेद
मवेववेदपुमहेवेपवेवपुददुव। इणठयदहोयेदपदपुवेद। देवेदुवपुदकुंयदपुववेद। इणठेवपुववेदपुववेदपुववेद। इणठयदपुववेदपुववेद
वेद। इणठयदवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद।
पुवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद। इणठेवेदपुववेदपुववेद।

[illegible]

[illegible]

天

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



三

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(Faint handwritten text in Devanagari script)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

NOT

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अष्टादशोऽध्यायः ॥

[illegible]

[The text in this block is extremely faded and illegible due to poor scan quality.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

三

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टाध्याय्ये अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ भगवन्मया श्रुतं ब्रह्मविद्यायां योगक्षेत्रं
 त्वं प्रपञ्चयस्व मे ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टाध्याय्ये अष्टमोऽध्यायः ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
710
711
712
713
714
715
716
717
718
719
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
1000

[The following text is extremely faint and largely illegible due to poor scan quality. It appears to be a continuous passage of handwritten script.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

學

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे । श्रीकृष्ण उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सजीव । द्रुपद उवाच । वीराणां त्वमर्हसि शशिर्बलवान्तरुमा । अस्मिन्नेव महाभारते विप्र उवाच ।

55

[illegible]

[illegible]

五五五

[illegible]

[illegible]

॥ अथ चतुर्थोऽङ्कः ॥
 १। अथ चतुर्थोऽङ्कः ॥

[illegible]

...

[illegible]

[illegible]

100

[illegible]

५७
५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

10

五

[illegible]

७७७
 ५०
 ६०
 ७०
 ८०
 ९०
 १००
 ११०
 १२०
 १३०
 १४०
 १५०
 १६०
 १७०
 १८०
 १९०
 २००
 २१०
 २२०
 २३०
 २४०
 २५०
 २६०
 २७०
 २८०
 २९०
 ३००
 ३१०
 ३२०
 ३३०
 ३४०
 ३५०
 ३६०
 ३७०
 ३८०
 ३९०
 ४००
 ४१०
 ४२०
 ४३०
 ४४०
 ४५०
 ४६०
 ४७०
 ४८०
 ४९०
 ५००
 ५१०
 ५२०
 ५३०
 ५४०
 ५५०
 ५६०
 ५७०
 ५८०
 ५९०
 ६००
 ६१०
 ६२०
 ६३०
 ६४०
 ६५०
 ६६०
 ६७०
 ६८०
 ६९०
 ७००
 ७१०
 ७२०
 ७३०
 ७४०
 ७५०
 ७६०
 ७७०
 ७८०
 ७९०
 ८००
 ८१०
 ८२०
 ८३०
 ८४०
 ८५०
 ८६०
 ८७०
 ८८०
 ८९०
 ९००
 ९१०
 ९२०
 ९३०
 ९४०
 ९५०
 ९६०
 ९७०
 ९८०
 ९९०
 १०००

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

[illegible]

●

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

三

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवासे अष्टाध्यायी नामाष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 कुरुक्षेत्रे रथे कृत्वा तर्काङ्गुलीं शूराणां पादयोः संधायित्वा द्रुपद उवाच ॥ १ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ २ ॥
 साधुना मुनिना मे प्रवृत्तं श्रुत्वा ह स्माह पण्डित ॥ ३ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ४ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ५ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ६ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ७ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ८ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ९ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पांडवश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

張其成

गीतापरमार्थसंग्रहे मन्त्रावलीप्रकरणे विष्णुपञ्चमोऽध्यायः । दशमस्कन्धे कुरुक्षेत्रे वृथाभारतं युद्धं प्रकृत्य तत्कालं
 देवैर्वाक्यं व्यक्तं भूद्वन्द्वं पश्यन्नुद्योगं संपन्नं वाक्यं व्यक्तं भूद्वन्द्वं पश्यन्नुद्योगं संपन्नं वाक्यं व्यक्तं भूद्वन्द्वं पश्यन्नुद्योगं संपन्नं
 गावामर्थक्यं दत्तं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं ।
 पाठेन धर्मविज्ञानं प्राप्तं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं ।
 केवलं धर्मविज्ञानं प्राप्तं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं ।
 नारायणेनैव यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं । अथ च धर्मविज्ञानं यत्पठते ह्यस्मादेहमेवमुक्तं ।

[illegible]

三

[illegible]

天啓聖明

[illegible]

[illegible]

[illegible]

王

(The following text is extremely faint and largely illegible due to low contrast and bleed-through from the reverse side. It appears to be a continuation of Sanskrit script.)

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टाध्याय्ये अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 अथ भगवत्पुनरुवाच ॥ अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥
 ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ १ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ २ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ३ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ४ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ५ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ६ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ७ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ८ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ ९ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ ब्रह्मणेन प्रोक्तं वचनं धर्मस्यैतन्मया श्रुतम् ॥ १० ॥

[illegible]

[The following text is extremely faded and largely illegible due to poor scan quality. It appears to contain several lines of handwritten script.]

一、

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

張

[illegible]

[illegible]

張

[illegible]

卷之四

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

227

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Page 2

[illegible]

1000

भवपदार्थसुखा। सुखनेत्रोपरि कल्पयेत्कामयस्त्रेण पश्यतु॥ अथ यथा च दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् । इति सूत्रम् । परमहंसिना
 यन्मात्रं दृष्टं तमेवैव दृष्टं केनचित्पुरुषाणां सौख्यं पुनश्च मया पश्यतां नृणां । अतोऽपि यथा दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् ।
 सुखपदार्थसुखा। सुखनेत्रोपरि कल्पयेत्कामयस्त्रेण पश्यतु॥ अथ यथा च दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् । इति सूत्रम् । परमहंसिना
 यन्मात्रं दृष्टं तमेवैव दृष्टं केनचित्पुरुषाणां सौख्यं पुनश्च मया पश्यतां नृणां । अतोऽपि यथा दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् ।
 सुखपदार्थसुखा। सुखनेत्रोपरि कल्पयेत्कामयस्त्रेण पश्यतु॥ अथ यथा च दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् । इति सूत्रम् । परमहंसिना
 यन्मात्रं दृष्टं तमेवैव दृष्टं केनचित्पुरुषाणां सौख्यं पुनश्च मया पश्यतां नृणां । अतोऽपि यथा दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् ।
 सुखपदार्थसुखा। सुखनेत्रोपरि कल्पयेत्कामयस्त्रेण पश्यतु॥ अथ यथा च दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् । इति सूत्रम् । परमहंसिना
 यन्मात्रं दृष्टं तमेवैव दृष्टं केनचित्पुरुषाणां सौख्यं पुनश्च मया पश्यतां नृणां । अतोऽपि यथा दृष्टं तदेव यथा चेन्न विचार्यते न भवेत् ।

[illegible]

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ १ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ २ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ३ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ४ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ५ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ६ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ७ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ८ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ ९ ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ १० ॥ अथ द्रुपद उवाच ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]



3

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五品廕

(The text in this image is extremely faded and illegible. It appears to be a single line of handwritten script.)

卷之四

[illegible]

[illegible]

三

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is highly degraded and largely illegible due to extreme blurring and noise. It appears to be a single-line inscription or a header section.]

[illegible]

2019

[The text in this image is extremely faint and illegible due to low contrast and poor reproduction quality.]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

与 成 金

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

6000

[illegible]

[illegible]

[illegible]

THE
 NEW
 YORK
 PUBLIC
 LIBRARY
 ASTOR
 LENOX
 TILDEN FOUNDATION
 125 WEST 4TH STREET
 NEW YORK, N. Y. 10014

1991

[illegible]

5721

[illegible]

~~[Illegible text]~~

[The text in this block is extremely faded and illegible.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1991

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1321 *unpublished*

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

第五期

[illegible]

[illegible]

2012

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

→ 2000

1

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

14

[illegible]

[illegible]

[illegible]

張其成

[illegible]

04

12/1/20

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

4

4

[illegible]

張四子

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

[The following text is extremely faded and largely illegible due to poor scan quality.]

मन्त्रं च गायत्रीमन्त्रं च वाच्यम् । कुम्भार्पणं विष्णुर्वायवश्चैव सप्ततन्त्रम् ।
 नैऋत्येन दक्षिणेन वायवेन उत्तरेण अग्निना पूज्यम् । पूर्वोत्तरदिशि च
 शिवं विसृज्य भस्मपात्रं ध्यायेत् । तदा देवतायाः प्रकटिताः सन्ति ।
 तेषां नामानि निम्नलिखितानि सन्ति । इति श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

馬

[illegible]

[illegible]

卷之五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ १ ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥
 १ ॥

五、

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवा-
दः ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्वाक्यं ब्रूयान्मया श्रुतं ॥
कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥ २ ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ३ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ४ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ५ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ६ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ७ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ८ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ ९ ॥
अथ कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निः प्रज्वालितः ॥
सर्वं भवति धूमं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
आकाशमधो गच्छति त्वं गच्छसि पार्थ नृप ॥ १० ॥

[illegible]

[Faint handwritten text at the bottom of the page]

[illegible]

[The following text is highly illegible due to extreme blurring and low resolution.]

[The text in this block is extremely faint and illegible due to low contrast and blurring.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

卷之四

[The following text is extremely faint and illegible due to poor scan quality.]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य वचनम् ॥
अथ कुरुक्षेत्रे युद्धम् ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्ब्रूयात् ॥
द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
माकाङ्क्षन्तु विजयं मृत्योर्माणाभिर्यद्भवत् ॥ १ ॥
अथ द्रोण उवाच ॥ पाण्डवस्यैव त्विह विजयः ॥ २ ॥
अथ भीमार्जुनसंवादे भीमार्जुनस्य वचनम् ॥
भीमार्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ पाण्डवस्यैव त्विह विजयः ॥ ३ ॥
अथ द्रोण उवाच ॥ पाण्डवस्यैव त्विह विजयः ॥ ४ ॥

[The following text is extremely faint and largely illegible due to poor scan quality. It appears to be a continuation of the Sanskrit manuscript.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible][illegible]

253

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ।
अर्जुन उवाच । पाशपातप्रपञ्चैस्तप्तकलकादिभिः
सह संहरन्ति मया धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता
एवाहमेव तान् पाशैश्च पातैश्च कलिना ह्यहम् ।
उवाच । अत्र शूरा महेष्वाहा द्रुपदभीमार्जुनसम-
वाक् । युधिष्ठिर उवाच । अत्र भीमार्जुनसमा युधि-
रथा । युधिष्ठिर उवाच । अत्र भीमार्जुनसमा युधि-
रथा । युधिष्ठिर उवाच । अत्र भीमार्जुनसमा युधि-

13

43

五、

255

1997

10

[illegible]

一、**總論**
 二、**分論**
 三、**附錄**
 四、**索引**
 五、**跋**
 六、**後記**
 七、**再版後記**
 八、**三版後記**
 九、**四版後記**
 十、**五版後記**
 十一、**六版後記**
 十二、**七版後記**
 十三、**八版後記**
 十四、**九版後記**
 十五、**十版後記**
 十六、**十一版後記**
 十七、**十二版後記**
 十八、**十三版後記**
 十九、**十四版後記**
 二十、**十五版後記**
 二十一、**十六版後記**
 二十二、**十七版後記**
 二十三、**十八版後記**
 二十四、**十九版後記**
 二十五、**二十版後記**
 二十六、**二十一版後記**
 二十七、**二十二版後記**
 二十八、**二十三版後記**
 二十九、**二十四版後記**
 三十、**二十五版後記**
 三十一、**二十六版後記**
 三十二、**二十七版後記**
 三十三、**二十八版後記**
 三十四、**二十九版後記**
 三十五、**三十版後記**
 三十六、**三十一版後記**
 三十七、**三十二版後記**
 三十八、**三十三版後記**
 三十九、**三十四版後記**
 四十、**三十五版後記**
 四十一、**三十六版後記**
 四十二、**三十七版後記**
 四十三、**三十八版後記**
 四十四、**三十九版後記**
 四十五、**四十版後記**
 四十六、**四十一版後記**
 四十七、**四十二版後記**
 四十八、**四十三版後記**
 四十九、**四十四版後記**
 五十、**四十五版後記**
 五十一、**四十六版後記**
 五十二、**四十七版後記**
 五十三、**四十八版後記**
 五十四、**四十九版後記**
 五十五、**五十版後記**
 五十六、**五十一版後記**
 五十七、**五十二版後記**
 五十八、**五十三版後記**
 五十九、**五十四版後記**
 六十、**五十五版後記**
 六十一、**五十六版後記**
 六十二、**五十七版後記**
 六十三、**五十八版後記**
 六十四、**五十九版後記**
 六十五、**六十版後記**
 六十六、**六十一版後記**
 六十七、**六十二版後記**
 六十八、**六十三版後記**
 六十九、**六十四版後記**
 七十、**六十五版後記**
 七十一、**六十六版後記**
 七十二、**六十七版後記**
 七十三、**六十八版後記**
 七十四、**六十九版後記**
 七十五、**七十版後記**
 七十六、**七十一版後記**
 七十七、**七十二版後記**
 七十八、**七十三版後記**
 七十九、**七十四版後記**
 八十、**七十五版後記**
 八十一、**七十六版後記**
 八十二、**七十七版後記**
 八十三、**七十八版後記**
 八十四、**七十九版後記**
 八十五、**八十版後記**
 八十六、**八十一版後記**
 八十七、**八十二版後記**
 八十八、**八十三版後記**
 八十九、**八十四版後記**
 九十、**八十五版後記**
 九十一、**八十六版後記**
 九十二、**八十七版後記**
 九十三、**八十八版後記**
 九十四、**八十九版後記**
 九十五、**九十版後記**
 九十六、**九十一版後記**
 九十七、**九十二版後記**
 九十八、**九十三版後記**
 九十九、**九十四版後記**
 一百、**九十五版後記**
 一百零一、**九十六版後記**
 一百零二、**九十七版後記**
 一百零三、**九十八版後記**
 一百零四、**九十九版後記**
 一百零五、**一百版後記**
 一百零六、**一百零一版後記**
 一百零七、**一百零二版後記**
 一百零八、**一百零三版後記**
 一百零九、**一百零四版後記**
 一百一十、**一百零五版後記**
 一百一十一、**一百零六版後記**
 一百一十二、**一百零七版後記**
 一百一十三、**一百零八版後記**
 一百一十四、**一百零九版後記**
 一百一十五、**一百一十版後記**
 一百一十六、**一百一十一版後記**
 一百一十七、**一百一十二版後記**
 一百一十八、**一百一十三版後記**
 一百一十九、**一百一十四版後記**
 一百二十、**一百一十五版後記**
 一百二十一、**一百一十六版後記**
 一百二十二、**一百一十七版後記**
 一百二十三、**一百一十八版後記**
 一百二十四、**一百一十九版後記**
 一百二十五、**一百二十版後記**
 一百二十六、**一百二十一版後記**
 一百二十七、**一百二十二版後記**
 一百二十八、**一百二十三版後記**
 一百二十九、**一百二十四版後記**
 一百三十、**一百二十五版後記**
 一百三十一、**一百二十六版後記**
 一百三十二、**一百二十七版後記**
 一百三十三、**一百二十八版後記**
 一百三十四、**一百二十九版後記**
 一百三十五、**一百三十版後記**
 一百三十六、**一百三十一版後記**
 一百三十七、**一百三十二版後記**
 一百三十八、**一百三十三版後記**
 一百三十九、**一百三十四版後記**
 一百四十、**一百三十五版後記**
 一百四十一、**一百三十六版後記**
 一百四十二、**一百三十七版後記**
 一百四十三、**一百三十八版後記**
 一百四十四、**一百三十九版後記**
 一百四十五、**一百四十版後記**
 一百四十六、**一百四十一版後記**
 一百四十七、**一百四十二版後記**
 一百四十八、**一百四十三版後記**
 一百四十九、**一百四十四版後記**
 一百五十、**一百四十五版後記**
 一百五十一、**一百四十六版後記**
 一百五十二、**一百四十七版後記**
 一百五十三、**一百四十八版後記**
 一百五十四、**一百四十九版後記**
 一百五十五、**一百五十版後記**
 一百五十六、**一百五十一版後記**
 一百五十七、**一百五十二版後記**
 一百五十八、**一百五十三版後記**
 一百五十九、**一百五十四版後記**
 一百六十、**一百五十五版後記**
 一百六十一、**一百五十六版後記**
 一百六十二、**一百五十七版後記**
 一百六十三、**一百五十八版後記**
 一百六十四、**一百五十九版後記**
 一百六十五、**一百六十版後記**
 一百六十六、**一百六十一版後記**
 一百六十七、**一百六十二版後記**
 一百六十八、**一百六十三版後記**
 一百六十九、**一百六十四版後記**
 一百七十、**一百六十五版後記**
 一百七十一、**一百六十六版後記**
 一百七十二、**一百六十七版後記**
 一百七十三、**一百六十八版後記**
 一百七十四、**一百六十九版後記**
 一百七十五、**一百七十版後記**
 一百七十六、**一百七十一版後記**
 一百七十七、**一百七十二版後記**
 一百七十八、**一百七十三版後記**
 一百七十九、**一百七十四版後記**
 一百八十、**一百七十五版後記**
 一百八十一、**一百七十六版後記**
 一百八十二、**一百七十七版後記**
 一百八十三、**一百七十八版後記**
 一百八十四、**一百七十九版後記**
 一百八十五、**一百八十版後記**
 一百八十六、**一百八十一版後記**
 一百八十七、**一百八十二版後記**
 一百八十八、**一百八十三版後記**
 一百八十九、**一百八十四版後記**
 一百九十、**一百八十五版後記**
 一百九十一、**一百八十六版後記**
 一百九十二、**一百八十七版後記**
 一百九十三、**一百八十八版後記**
 一百九十四、**一百八十九版後記**
 一百九十五、**一百九十版後記**
 一百九十六、**一百九十一版後記**
 一百九十七、**一百九十二版後記**
 一百九十八、**一百九十三版後記**
 一百九十九、**一百九十四版後記**
 二百、**一百九十五版後記**
 二百零一、**一百九十六版後記**
 二百零二、**一百九十七版後記**
 二百零三、**一百九十八版後記**
 二百零四、**一百九十九版後記**
 二百零五、**二百版後記**
 二百零六、**二百零一版後記**
 二百零七、**二百零二版後記**
 二百零八、**二百零三版後記**
 二百零九、**二百零四版後記**
 二百一十、**二百零五版後記**
 二百一十一、**二百零六版後記**
 二百一十二、

[illegible]

[illegible]

卷一百一十五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



॥ अथ गणेशपूजाप्रमाणं ॥ गणेशपूजाप्रमाणं ॥ गणेशपूजाप्रमाणं ॥ गणेशपूजाप्रमाणं ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

七

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥

● 金

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



卷之四

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिं प्रोक्ष्य ॥ २ ॥

[The text in this image is extremely faded and illegible.]

五

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे । अर्जुन उवाच । पादौ द्रुपद उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि शङ्खध्वजास्तथा ।

● 2011年12月11日

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or damage.]

[illegible]

(Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side.)

2017

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

22

[illegible]

張氏

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

● 2010年10月10日

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

2022

[illegible]

10

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is highly degraded and mostly illegible due to severe damage and fading.]

1924

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

50

[illegible]

[illegible]

[illegible]



155

[illegible]

2007

[illegible]

[illegible]

15

[illegible]

2

四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The text in this block is extremely faded and illegible.]

[illegible]

[illegible]

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अर्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जताः ॥ १ ॥

[illegible]



1291

卷之五

[illegible]

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

[illegible]

三

[The text in this image is extremely faint and illegible due to low contrast and blurring.]

四庫全書

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



卷之四

[illegible]

800.7

[illegible]

卷之四

[illegible]

4

THE

[illegible]

張

[illegible]

[illegible]



122



121

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

19

[illegible]

[illegible]

गङ्गा नदी

1991

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पुस्तकालय

22

[illegible]

[illegible]

५४। ...
...
...
...
...
...
...
...
...

[illegible]

[The text in this block is extremely faded and illegible.]

[illegible]

[illegible]

5

五言古詩

125

14

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

4/29/2016

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1992

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2014

[illegible]

卷之五

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

25

[illegible]

[illegible]

1922

[illegible]

[illegible]

[illegible]

王世貞

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

三

[illegible]

[illegible]

[illegible]

知不足齋

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ३ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ४ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ५ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ६ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ७ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ८ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ ९ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥ १० ॥

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

मउसमाप्रवरपमपुयेये शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 शुभवेदेवदुपयेसेसकेसपुयेयेपुयकयेमापउवाहोरादोपासिपयसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥ शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥
 शुक्रमरेश्वरसोमपडापयेयेदपयहोरादसुमप्रदसुसु शुभवेदा देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥

देवसुमसुमपुयेयेसोमापउवा ॥५॥

[illegible]

五、

[illegible]



卷之四

[illegible][illegible]

● 〇

[illegible]

THE UNIVERSITY OF CHICAGO



43

05/20/2011

[illegible]

94235

[illegible]

महाराष्ट्र

७२५३४५६७८९१०

WINN-DIXIE

阿拉伯文

मद्रूपेयकं यथा सुखा

282 PM 4 4 4 4 4

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

卷之四
 四
 五
 六
 七
 八
 九
 十
 十一
 十二
 十三
 十四
 十五
 十六
 十七
 十八
 十九
 二十
 二十一
 二十二
 二十三
 二十四
 二十五
 二十六
 二十七
 二十八
 二十九
 三十
 三十一
 三十二
 三十三
 三十四
 三十五
 三十六
 三十七
 三十八
 三十九
 四十
 四十一
 四十二
 四十三
 四十四
 四十五
 四十六
 四十七
 四十八
 四十九
 五十
 五十一
 五十二
 五十三
 五十四
 五十五
 五十六
 五十七
 五十八
 五十九
 六十
 六十一
 六十二
 六十三
 六十四
 六十五
 六十六
 六十七
 六十八
 六十九
 七十
 七十一
 七十二
 七十三
 七十四
 七十五
 七十六
 七十七
 七十八
 七十九
 八十
 八十一
 八十二
 八十三
 八十四
 八十五
 八十六
 八十七
 八十八
 八十九
 九十
 九十一
 九十二
 九十三
 九十四
 九十五
 九十六
 九十七
 九十八
 九十九
 一百

[illegible]

卷之五
 五言古詩
 五言律詩
 五言絕句
 七言古詩
 七言律詩
 七言絕句
 詞
 曲
 雜劇
 傳奇
 小說
 詩話
 詞話
 戲文
 雜記
 雜錄
 雜著
 雜書
 雜字
 雜考
 雜論
 雜說
 雜談
 雜聞
 雜事
 雜錄
 雜著
 雜書
 雜字
 雜考
 雜論
 雜說
 雜談
 雜聞
 雜事

॥ सप्तमः अङ्कः ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादयोगः समाप्तः ॥

[illegible]

[The following text is extremely faded and largely illegible due to poor scan quality.]



691

[illegible]

10

四

[illegible]

[illegible]

明

[illegible]

[illegible]

[illegible]

水

4



10

59

林





महाराज

20

[illegible]

३७१
 ३७२
 ३७३
 ३७४
 ३७५
 ३७६
 ३७७
 ३७८
 ३७९
 ३८०
 ३८१
 ३८२
 ३८३
 ३८४
 ३८५
 ३८६
 ३८७
 ३८८
 ३८९
 ३९०
 ३९१
 ३९२
 ३९३
 ३९४
 ३९५
 ३९६
 ३९७
 ३९८
 ३९९
 ४००

[illegible]

[illegible]

5244

9424

[illegible]



Q. 10

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

५८। शुद्धि वसवसमस्तु त्रिंशत् शतं दत्तं। देवता उवाच नो माया कदापि कष्टं दत्तं। सुखं तु न मे कष्टं कष्टं न। यद्वद
 त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न।
 त्रिंशत् शतं दत्तं। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं। त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न।
 त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न।
 त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न।
 त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न। देवता पुरं रघुपात्रुषा। केषां पठं ह्यथ कष्टं दत्तं त्रिंशत् शतं देवता कदापि कष्टं न।

100

107

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1

卷之四

5

91

[illegible][illegible]

一、

[illegible]

[illegible]

子思子

[illegible]

ON THE

[illegible]

[illegible]

三

[illegible]

天

吳天啟

[illegible]



卷之四

12

[illegible]

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः
 मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षि-
 त्तम ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव
 किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे
 कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षि ॥ १ ॥



42

五

[illegible]

● 2019 年 12 月 1 日

[illegible]



221

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

29

सुब्रह्मणे पतितैः सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं
 तुदः सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं
 यदस्मिन्महासागरात् सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं
 सुब्रह्मणे पतितैः सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं
 यदस्मिन्महासागरात् सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं
 सुब्रह्मणे पतितैः सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं
 यदस्मिन्महासागरात् सप्तदशभुजसु रदने नष्टे पुनः केन वा विना गतम् ॥ पुनः त्वं पुनः कुरु कुतश्च द्रष्टुं द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं न द्रष्टव्यं

[illegible]

[illegible]

一、**總論**

4

22

45

25/05/2017

[illegible]

卷之六

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五十六

[illegible]

[illegible]

३०५५

[illegible]

628

[illegible]



20



१३३५५१

海防

225

20

1943

[illegible]

大

[illegible]

454

卷之四

[illegible]

張

[illegible]

○

[illegible]

[illegible]

4

金

一、

[illegible]

255

[illegible]

五

[illegible]

24

[illegible]

[illegible]

CH 33

[illegible]



3

五



कृष्णचन्द्र

कैषाणवर्षिन्दुद

सुखादिभिरुत्पन्नैः ।

१॥ वृत्तवर्गकृपाव्यवहारः ॥

पुनरुत्पद्यते पुनर्हं कर्मण्यग्नौ क्ष्वेदयित्वा यद्भुज

प्रियाद्वयवत्पुष्पाद्यैरुभयपक्षे केशसु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

०५७३। १२५९४६५। १२५९४६५। १२५९४६५।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मविषयप्रसङ्गसुखदुःखेण संशयप्रसङ्गसुखदुःखेण परित्यज्य व्याहृत्य परित्यज्य

सम्यग्वाचस्पत्युक्तं वक्ष्यते कदाचिदुक्तं वा ॥ ५॥

हृषिकेशसुतस्य कथं विदुः ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

2000

[illegible]

1877

[illegible]

245

[illegible]

[illegible]

महाराष्ट्र

1991

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

聖天子

[illegible]



卷之五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्वाक्यं वदस्व मे ॥
 शृणु वदस्व मे ॥ २ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता
 युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत
 सज्जनाः ॥ ३ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ पाण्डवस्य धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
 पाण्डवो जयन्ते ॥ ४ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ५ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ पाण्डवो जयन्ते ॥
 पाण्डवो जयन्ते ॥ ६ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ७ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ पाण्डवो जयन्ते ॥
 पाण्डवो जयन्ते ॥ ८ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ९ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ पाण्डवो जयन्ते ॥
 पाण्डवो जयन्ते ॥ १० ॥

9424

[illegible]

पञ्चमस्कन्धोऽष्टमोऽध्यायः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
अथ कथयति भगवान्
पञ्चमस्कन्धोऽष्टमोऽध्यायः

॥ अथ कथयति भगवान्
पञ्चमस्कन्धोऽष्टमोऽध्यायः ॥
अथ कथयति भगवान्
पञ्चमस्कन्धोऽष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ कथयति भगवान्
पञ्चमस्कन्धोऽष्टमोऽध्यायः ॥
अथ कथयति भगवान्
पञ्चमस्कन्धोऽष्टमोऽध्यायः ॥



2

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण

299

22

25

[illegible]

10

五

[illegible]

卷之四

३२५
शिवपदुगा
पद्मपत्रस्यैव पठतां वपाय नृपतया
नृपतेः पद्मपत्रे वपायेत्तथा च नृपतेः
नृपतेः पद्मपत्रे वपायेत्तथा च नृपतेः

विमर्शना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

152

用

[illegible]

外史

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

張氏

[illegible]

[illegible]

五、

[The following text is highly degraded and mostly illegible due to extreme blurring and noise.]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
पञ्चवर्षेण भवति । दशवर्षेण भवति । केवलं वाक्यं भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।
सिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति । अथोपायः । वाक्यं मेव हि देवसिद्धिर्दुष्टादप्यस्य भवति ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]



94

五

[illegible]

三

[illegible]

五、

[illegible]



[The following text appears to be bleed-through from the reverse side of the manuscript page.]

299

[illegible]

५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2000

[illegible]

05/11/2019

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः
 मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत सन्महर्षिणा ॥

卷之四

[illegible]

22

9

[illegible]

[illegible]

張



02

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रो पांडुपुत्रं धनुर्वीर्यवान् ॥
 बभूवुः पाण्डुपुत्रं धनुर्वीर्यवान् ॥ २ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ३ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ४ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ५ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ६ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ७ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ८ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ९ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

100

[illegible]

[illegible]

5000

[illegible]



20

3

100

[illegible]

卷之六

[illegible]

१०५३

[illegible]



1986

44

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

242

[illegible]

[illegible]

54

[illegible]

[illegible]

五

[illegible]



五

五

99

कव
वह
कु
कु
कु

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

不須曰天

[The following text is highly illegible due to extreme blurring and low resolution.]

[illegible]

2002

[illegible]

[illegible]

三

[illegible]



29

[illegible]

卷之四

五

[illegible]



1991

[illegible]

[illegible]

525

[illegible]

五、



10



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

四

[illegible]

[illegible]

張

[The following text is extremely faint and largely illegible due to poor scan quality.]

[illegible]

[illegible]

169

[illegible]

757

卷之四

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे । अर्जुन उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सन्महाबाहू । द्रुपद उवाच । वीराणां त्वमर्जुन सर्वश्रेष्ठ ! दुष्टान् क्रूरकर्मिणो विबुधाः ।

四、

मास २ वर्षे सति स्यात्तदा कुरुष्व मनुजः पण्डितः पात्रः स्यात् ॥ २ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 सुधासिद्धे वृत्तौ स्यात् ॥ ३ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ ४ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 त्रिकैः सप्तैः स्यात् ॥ ५ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ ६ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 सप्तैः स्यात् ॥ ७ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ ८ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ ९ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १० ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ ११ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १२ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १३ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १४ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १५ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १६ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १७ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १८ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥
 अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ १९ ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥ २० ॥ अथ कुरुष्व मनुजः पण्डितः स्यात् ॥

[illegible]

[illegible]

○ 〇 〇 〇

1984

[illegible]

[illegible]

[illegible]

王明賢

[illegible]

[illegible]

出

मठस्य सुदुर्लभं दत्तं यथा कदाचन स्यात् तदा तत्रैव भिक्षुः भोजयितुं शक्यते । इति ।
 पुनरपि नृणां भिक्षुः भोजयितुं शक्यते । इति ।
 परमेश्वर उवाच । अहो महारथेण प्रयाणस्तु । इति ।
 कुर्वन्त्येतां विप्रान् । इति ।
 धर्मो रक्षति रक्षितः । इति ।
 पञ्चांगी । इति ।

मङ्गलम् ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १ ॥

MSB

[illegible]

THE

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

291

[illegible]

五

2

ॐ
ॐ
ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देवस्यैवावस्य वायस्य दद ॥ तेषां तस्यैवावस्य वायस्य दद ॥

ॐ
ॐ
ॐ

[illegible]

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2012

॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥

[illegible]

[illegible]

100
101
102
103

100
101
102
103

24

[illegible]



199

[illegible]

王鳳山

[illegible]

[illegible]

水

[illegible]

1992

[illegible]

29

[illegible]

明史紀事本末

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कृष्णार्जुनसंवादादौ त्रयोविंशत्यध्याये ॥

五

[illegible]

三

[illegible]

Д.С.С.



2001

[illegible]

張敬哲

[illegible]

सर्वप्रथम

[illegible]

張

[illegible]

卷之五

[illegible]

949

[illegible]

25

卷之四



२६४

पञ्चमः

सुभाषचन्द्र

अथर्ववेद



RECEIVED

2014年12月15日

1995

पुस्तकालय संख्या

15

[illegible]




37

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

1997

100

1954

[illegible]

五

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side.]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

四

[illegible]

1297

[illegible]

[illegible]

[illegible]

附錄

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1991

3

[illegible]

五十四

[illegible]



4

4

[illegible]

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ २ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ३ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ४ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ५ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ६ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ७ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ८ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ ९ ॥
यस्यैव कुटुम्बकम् ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

不

[illegible]

[illegible]

60321

[illegible]

卷五

[illegible]

[illegible]

100



臣

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

五

[illegible]



पुष्पक (५) ५०५५५५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे । अथ श्रीकृष्ण उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ।

9423

[illegible]

天

[illegible]

2024

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥

THE

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

三

[illegible]

9

1991

[illegible]

五、

[illegible]

[illegible]

吳

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

晉人

[illegible]

541 卷之五十五

[illegible]

9234

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

191

[illegible]

2017

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

1998

